

॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ श्री भगवान श्री गणेश नमः ॥

श्री गणेश स्तुति

Ganesh Stuti — संपूर्ण स्तोत्र पाठ, सरल हिंदी भावार्थ एवं पाठ विधि सहित

रचयिता: गोस्वामी तुलसीदास (विनय पत्रिका) ✓ निःशुल्क प्रामाणिक PDF

॥ संपूर्ण स्तोत्र पाठ (सरल हिंदी भावार्थ सहित) ॥

ध्यान मंत्र

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

भावार्थ: हे घुमावदार सूंड वाले, विशालकाय, करोड़ों सूर्यों के समान दिव्य व दैदीप्यमान तेज से युक्त देवाधिदेव भगवान गणेश! मेरे समस्त शुभ कार्यों को बिना किसी बाधा के सदा निर्विघ्न संपन्न कीजिए।

मंगलाचरण

गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम्।
उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम्॥

भावार्थ: हाथी के समान मुख वाले, समस्त शिव-गणों व देवों द्वारा सेवित, कैथ और जामुन के फलों को प्रिय भाव से भक्षण करने वाले, माता उमा (पार्वती) के नंदन और भक्तों के संपूर्ण शोक-संतापों का नाश करने वाले हे विघ्नेश्वर! आपके पावन चरण-कमलों में मेरा कोटि-कोटि नमन है।

श्लोक १

गाइये गनपति जगबंदन।
संकर-सुवन भवानी-नंदन॥ १॥

भावार्थ: समस्त संसार द्वारा वंदनीय, देवाधिदेव भगवान शंकर के सुपुत्र और जगज्जननी माँ भवानी के प्रिय नंदन प्रथम पूज्य भगवान श्री गणेश जी की पावन महिमा का भावपूर्वक गान कीजिए।

श्लोक २

सिद्धि-सदन गज-बदन बिनायक।
कृपा-सिंधु सुंदर सब-लायक॥ २॥

भावार्थ: जो समस्त अलौकिक सिद्धियों के धाम (घर) हैं, गज के समान मुख वाले विनायक हैं; जो अपार कृपा के सागर, अत्यंत मनोहारी और भक्तों की हर मनोकामना पूरी करने में सर्वथा समर्थ (सब लायक) हैं, उन श्री गणेश जी का गुणगान कीजिए।

श्लोक ३

मोदक-प्रिय मुद-मंगल-दाता।
बिद्या-बारिधि बुद्धि-बिधाता॥ ३॥

भावार्थ: जिन्हें मोदक (लड्डू) अतिशय प्रिय हैं, जो भक्तों को परम आनंद और सर्वविध मंगल प्रदान करने वाले हैं; जो समस्त विद्याओं के अगाध समुद्र और सद्बुद्धि के विधाता हैं, उन विघ्नहर्ता का स्मरण कीजिए।

श्लोक ४

माँगत तुलसिदास कर जोरे।
बसहिं रामसिय मानस मोरे॥ ४॥

भावार्थ: भक्त शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास जी दोनों हाथ जोड़कर प्रभु गणेश जी से यही एक वरदान मांगते हैं कि हे विघ्नहर्ता! आपकी कृपा से मेरे मन-मंदिर में प्रभु श्री सीताराम जी सदा-सदा के लिए प्रेमपूर्वक निवास करें।

समर्पण स्तुति

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते॥

भावार्थ: समस्त विघ्नों के अधिपति, मनोवांछित वर देने वाले, देवताओं के प्रिय, विशाल उदर वाले, सर्वकलाओं से परिपूर्ण, संपूर्ण जगत का कल्याण करने वाले, गजमुख, वेदों एवं यज्ञों से सुशोभित माता गौरी के पुत्र हे गणनाथ! आपको मेरा बारंबार सादर प्रणाम है।

🪔 नित्य पाठ विधि एवं नियम

- **उत्तम दिन एवं समय:** गणेश स्तुति का पाठ नित्य प्रातःकाल ब्रह्म मुहुर्त या सूर्योदय के समय करना सर्वोत्तम होता है। विशेष रूप से **बुधवार का दिन**, **विनायक चतुर्थी**, **संकष्टी चतुर्थी** तथा **गणेशोत्सव** के दिनों में यह पाठ सहस्र गुना पुण्यफल प्रदान करता है।
- **पवित्रता एवं आसन:** प्रातःकाल स्नानादि से निवृत्त होकर शुद्ध, धुले हुए वस्त्र (विशेषकर पीले अथवा लाल रंग के वस्त्र) धारण करें। पूर्व अथवा उत्तर दिशा की ओर मुख करके कुशा या ऊन के पवित्र आसन पर बैठें।
- **पूजा वेदी की स्थापना:** एक स्वच्छ चौकी पर लाल या पीला कपड़ा बिछाकर भगवान श्री गणेश की प्रतिमा अथवा चित्र स्थापित करें।
- **दीपक एवं धूप:** शुद्ध गाय के घी का दीपक प्रज्वलित करें और सुगंधित धूपबत्ती या अगरबत्ती जलाएं।
- **प्रिय पूजन सामग्री का अर्पण:**

🌸 पाठ के अद्भुत लाभ

- **समस्त कार्यों में निर्विघ्न सिद्धि:** स्तुति में प्रभु को *'सिद्धि-सदन गज-बदन बिनायक'* कहा गया है। इसका नित्य पाठ करने से व्यापार, नौकरी, गृह-निर्माण, विवाह अथवा शिक्षा में आ रही समस्त रुकावटें और विघ्न स्वतः समाप्त हो जाते हैं।
- **बुद्धि, ज्ञान और एकाग्रता का विकास:** गणेश जी *'बिद्या-बारिधि बुद्धि-बिधाता'* हैं। जो विद्यार्थी या प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे युवा नित्य इसका पाठ करते हैं, उनकी मेधा शक्ति, तार्किक क्षमता और स्मरण शक्ति में विलक्षण वृद्धि होती है।
- **घर-परिवार में सुख, समृद्धि और मंगल का आगमन:** स्तुति की पंक्ति *'मोदक-प्रिय मुद-मंगल-दाता'* के अनुसार भगवान गणेश अपने उपासक के गृह में मंगलकारी वातावरण निर्मित करते हैं और कलह, अशांति व नकारात्मक शक्तियों का नाश करते हैं।
- **आध्यात्मिक शांति और भगवद्-भक्ति की प्राप्ति:** तुलसीदास जी अंत में प्रार्थना करते हैं — *'माँगत तुलसिदास कर जोरे, बसहिं रामसिय मानस मोरे'*. इस स्तुति के प्रभाव से साधक का मन निष्काम भक्ति, सात्विकता और प्रभु चरणों के अनन्य अनुराग से भर जाता है।